ASTRO ARPITA NATH

वैदिक ज्योतिष में वर्ग कुंडलियों (वर्गों) की संपूर्ण मार्गदर्शिका

Arpita Nath द्वारा · वर्ग चार्ट · 2026-09-17

वैदिक ज्योतिष में, प्राथमिक जन्म कुंडली - राशि कुंडली (D1) - किसी व्यक्ति के कर्म का केवल एक बुनियादी व्यापक दृष्टिकोण (मैक्रो-व्यू) है। महर्षि पराशर ने 'बृहत् पराशर होरा शास्त्र' (BPHS) में एक लौकिक सूक्ष्मदर्शी (कॉस्मिक माइक्रोस्कोप) के रूप में कार्य करने के लिए अन्य विशिष्ट हार्दिक्स (harmonics) के साथ षोडशवर्गों (16 शास्त्रीय वर्ग कुंडलियों) का परिचय दिया है।

प्रत्येक वर्ग कुंडली 30 अंश की एक राशि को लेती है और उसे छोटे, हार्मोनिक खंडों में उप-विभाजित करती है। जब कोई ग्रह D1 कुंडली में शुभ या फलदायी दिखाई देता है, तो ज्योतिषी यह देखने के लिए संबंधित वर्ग कुंडली की जांच करते हैं कि क्या वह फल वास्तव में प्राप्त होगा।

1. षोडशवर्ग: 16 प्राथमिक पराशरी वर्ग कुण्डलियाँ

महर्षि पराशर ने 16 मुख्य वर्ग कुण्डलियों को अलग-अलग स्तरों में वर्गीकृत किया है: षड्वर्ग (6 बुनियादी कुण्डलियाँ), सप्तवर्ग (7 कुण्डलियाँ), दशवर्ग (10 कुण्डलियाँ), और पूर्ण षोडशवर्ग (16 कुण्डलियाँ)।

D1 — राशि कुण्डली (स्थूल भौतिक स्तर)
• **विभाजन**: पूर्ण राशि (30°)।
• **महत्व**: भौतिक शरीर, समग्र स्वास्थ्य, जीवन का आधारभूत मार्ग, जीवन शक्ति और बाहरी वातावरण। यह अन्य सभी वर्ग कुण्डलियों के विश्लेषण के लिए प्राथमिक आधार है।

D2 — होरा कुण्डली (धन और संसाधन)
• **विभाजन**: एक राशि का आधा भाग (15°)।
• **महत्व**: तरल संपत्ति, वित्तीय संचय, समृद्धि, स्व-अर्जित धन और वित्तीय स्थिरता। यह प्रत्येक राशि को सूर्य (सौर/पुरुष/प्रयास) और चंद्र (चंद्र/स्त्री/संसाधन संचय) के क्षेत्रों में विभाजित करती है।

D3 — द्रेष्काण कुण्डली (भाई-बहन, ऊर्जा और साहस)
• **विभाजन**: एक राशि का एक-तिहाई भाग (10°)।
• **महत्व**: छोटे और बड़े भाई-बहन, सहकर्मी, व्यक्तिगत साहस, सहनशक्ति, पहल और प्रेरणा। इसका उपयोग जैमिनी द्रेष्काण और वर्णद लग्न के माध्यम से आयु (आयुर्दाय) की गणना के लिए भी किया जाता है।

D4 — चतुर्थांश / तुर्यांश (गृह, अचल संपत्ति और भाग्य)
• **विभाजन**: एक राशि का एक-चौथाई भाग (7° 30')।
• **महत्व**: अचल संपत्ति, भूमि, गृह सुख, पारिवारिक वातावरण, पैतृक विरासत और सामान्य सांसारिक भाग्य।

D7 — सप्तांश (संतान और वंश परंपरा)
• **विभाजन**: एक राशि का सातवां भाग (4° 17' 08")।
• **महत्व**: गर्भाधान, संतान, पोते-पोतियां, प्रजनन क्षमता, रचनात्मक विरासत और संतान से प्राप्त होने वाला समग्र सुख।

D9 — नवांश (धर्म, विवाह और प्रारब्ध)
• **विभाजन**: एक राशि का नौवां भाग (3° 20')।
• **महत्व**: वैदिक ज्योतिष में सबसे महत्वपूर्ण वर्ग कुण्डली। यह आत्मा की आंतरिक क्षमता, आध्यात्मिक झुकाव (धर्म), जीवन के उत्तरार्ध (परिपक्वता के बाद), और जीवनसाथी व विवाह की प्रकृति, दीर्घायु और स्थिरता को दर्शाती है। D1 में कमजोर लेकिन D9 में उच्च का ग्रह गुप्त बल प्राप्त करता है।

D10 — दशांश (करियर, प्रतिष्ठा और सार्वजनिक कर्म)

• **विभाजन**: एक राशि का दसवां भाग (3° 00')।
• **महत्व**: आजीविका/व्यवसाय, सार्वजनिक प्रतिष्ठा, प्रशासनिक नेतृत्व, करियर की प्रमुख उपलब्धियां, सरकारी सम्मान, सामाजिक प्रभाव और दीर्घकालिक कर्म।

D12 — द्वादशांश (माता-पिता और पैतृक विरासत)
• **विभाजन**: एक राशि का बारहवां भाग (2° 30')।
• **महत्व**: माता, पिता, पैतृक जड़ें, पीढ़ीगत कर्म और सीधे जैविक रक्तसंबंध से प्राप्त पूर्वजन्म के संस्कार।

D16 — षोडशांश / कलांश (वाहन, सुख और विलासिता)
• **विभाजन**: एक राशि का सोलहवां भाग (1° 52' 30")।
• **महत्व**: वाहन, मोटर वाहन, सामान्य भौतिक सुख-सुविधाएं, यात्रा के दौरान दुर्घटनाएं और भौतिक संपत्तियों से मिलने वाला आंतरिक सुख।

D20 — विंशांश (आध्यात्मिक साधना और भक्ति)
• **विभाजन**: एक राशि का बीसवां भाग (1° 30')।
• **महत्व**: ध्यान, आध्यात्मिक उन्नति, इष्ट देवता के प्रति भक्ति, धार्मिक अनुष्ठान, गूढ़ विद्याओं का अध्ययन और मंत्र सिद्धि की प्राप्ति।

D24 — चतुर्विंशांश / सिद्धांश (उच्च शिक्षा और बुद्धि)
• **विभाजन**: एक राशि का चौबीसवां भाग (1° 15')।
• **महत्व**: शैक्षणिक उपलब्धियां, औपचारिक शिक्षा, विश्लेषणात्मक बुद्धि, विद्वत्ता, दार्शनिक अनुसंधान और कलात्मक कौशल।

D27 — सप्तविंशांश / नक्षत्रांश / भांश (अंतर्निहित बल और कमजोरियां)
• **विभाजन**: एक राशि का सत्ताईसवां भाग (1° 06' 40")।
• **महत्व**: शारीरिक सहनशक्ति, अवचेतन आंतरिक शक्ति, जीवन ऊर्जा और गहरी मनोवैज्ञानिक कमजोरियां जो संकट के समय हमारी प्रतिक्रियाओं को दिशा देती हैं।

D30 — त्रिंशांश (दुर्भाग्य, अनिष्ट और अरिष्ट)
• **विभाजन**: पांच गैर-प्रकाशमान ग्रहों (मंगल, शनि, गुरु, बुध, शुक्र) को सौंपे गए असमान पांच-गुना विभाजन।
• **महत्व**: पुरानी बीमारियां, छिपे हुए चारित्रिक दोष, गहरे कार्मिक ऋण, नैतिक प्रलोभन, मुकदमेबाजी और अप्रत्याशित दुर्घटनाएं।

D40 — खवेदांश / स्ववेदांश (शुभ और अशुभ कर्म)
• **विभाजन**: एक राशि का चालीसवां भाग (0° 45')।
• **महत्व**: उच्च आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक आशीर्वाद, पूर्व जन्म के शुभ कर्म और ननिहाल पक्ष से विरासत में मिले संस्कार।

D45 — अक्षवेदांश (समग्र कल्याण और नैतिक सत्यनिष्ठा)
• **विभाजन**: एक राशि का पैंतालीसवां भाग (0° 40')।
• **महत्व**: चरित्र की पवित्रता, नैतिक सत्यनिष्ठा, समग्र जीवन संतुलन और पितृ पक्ष से विरासत में मिले पुण्य।

D60 — षष्ट्यंश (पूर्व जन्म के कर्म और प्रारब्ध)
• **विभाजन**: एक राशि का साठवां भाग (0° 30')।
• **महत्व**: पराशरी ज्योतिष में सबसे अधिक महत्व वाली वर्ग कुण्डली (विंशोपक बल में इसका मान स्वयं D1 कुण्डली से भी अधिक होता है)। यह विशिष्ट प्रारब्ध कर्म (पूर्व जन्म के पके हुए कर्म) को उजागर करती है जो वर्तमान जन्म की घटनाओं को तय करते हैं। चूंकि यह लगभग हर दो मिनट में बदल जाती है, इसलिए इसके लिए सटीक जन्म-समय के सत्यापन की आवश्यकता होती है।

2. अतिरिक्त शास्त्रीय एवं विशिष्ट वर्ग कुंडलियाँ (Divisional Charts)

16 मुख्य पराशरी वर्गों के अतिरिक्त, शास्त्रीय ज्योतिष परंपराएँ जीवन के विशिष्ट क्षेत्रों का विश्लेषण करने के लिए कुछ अन्य वर्ग विभाजनों का भी उपयोग करती हैं:

D5 — पंचमांश (प्रसिद्धि, यश एवं आध्यात्मिक शक्ति)
• **विभाजन**: एक राशि का पाँचवाँ भाग (6° 00')।
• **महत्व**: प्रसिद्धि, अधिकार, व्यक्तिगत प्रभाव, आध्यात्मिक अनुशासन और प्रतिस्पर्धात्मक वर्चस्व के गहन आकलन के लिए उपयोग किया जाता है।

D6 — षष्ठांश (ऋण, शत्रु एवं स्वास्थ्य संबंधी जटिलताएँ)
• **विभाजन**: एक राशि का छठा भाग (5° 00')।
• **महत्व**: यह पूर्ण रूप से छठे भाव के विषयों के लिए समर्पित है: दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याएँ, कानूनी विवाद, प्रत्यक्ष शत्रु और दैनिक ऋण।

D8 — अष्टमांश (आकस्मिक संकट, आयु एवं विपत्तियाँ)
• **विभाजन**: एक राशि का आठवाँ भाग (3° 45')।
• **महत्व**: दुर्घटनाजनित चोटें, आकस्मिक परिवर्तन, शल्य चिकित्सा (सर्जरी) की संभावना, गूढ़ घटनाएँ और मृत्यु का समय (आयुर्दाय)।

D11 — रुद्रांश / एकादशांश (मृत्यु, अप्रत्याशित लाभ एवं संघर्ष)
• **विभाजन**: एक राशि का ग्यारहवाँ भाग (2° 43' 38")।
• **महत्व**: भगवान रुद्र (शिव का संहारक रूप) से संबंधित; बड़े संकटों, तीव्र आंतरिक संघर्षों, कानूनी विवादों, अप्रत्याशित लाभों और दीर्घायु को प्रभावित करने वाले अरिष्ट (अशुभ प्रभावों) का विश्लेषण करने के लिए उपयोग किया जाता है।

D72 — अश्विनीकुमारांश (चिकित्सा ज्योतिष एवं गहन उपचार)
• **विभाजन**: एक राशि का बहत्तरवाँ भाग (0° 25')।
• **महत्व**: देवताओं के दिव्य वैद्य (अश्विनी कुमार) इसके अधिपति हैं; गूढ़ चिकित्सा ज्योतिष में दुर्लभ और अत्यंत गहरे शारीरिक विकारों के निदान के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

D81 — नव-नवमांश (नवमांश का सूक्ष्मतम रूप)
• **विभाजन**: एक राशि का इक्यासीवाँ भाग (0° 22' 13")।
• **महत्व**: नवमांश का भी नवमांश; विशिष्ट शोध पद्धतियों में अत्यंत सूक्ष्म आध्यात्मिक प्रवृत्तियों और संबंधों के तालमेल की जाँच के लिए उपयोग किया जाता है।

D108 — अष्टोत्तरांश (गूढ़ आध्यात्मिक विकास)
• **विभाजन**: एक राशि का एक सौ आठवाँ भाग (0° 16' 40")।
• **महत्व**: यह ब्रह्मांडीय मंत्र की 108 पवित्र आवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करता है; आत्मा की अंतिम आध्यात्मिक मुक्ति (कैवल्य) को देखने के लिए उन्नत यौगिक विश्लेषण में इसका उपयोग किया जाता है।

D144 — द्वादश-द्वादशांश (पूर्व जन्म की पूर्ण स्मृति)
• **विभाजन**: एक राशि का एक सौ चौवालिसवाँ भाग (0° 12' 30")।
• **महत्व**: द्वादशांश का बारह गुना; यह गहन अवचेतन स्मृति कोष (चित्त) और पैतृक आध्यात्मिक विरासत का मानचित्रण करता है।

D150 — नाड़ी अंश (भाग्य का सूक्ष्म चाप)
• **विभाजन**: एक राशि का एक सौ पचासवाँ भाग (0° 12' 00")।
• **महत्व**: दक्षिण भारतीय नाड़ी ज्योतिष का मूल आधार। प्रत्येक राशि को 150 विशिष्ट नामांकित चाप खंडों (जैसे ब्रह्मा, वैष्णवी, कुबेर) में विभाजित किया जाता है। जातक के सटीक लग्न नाड़ी अंश की पहचान करके ज्योतिषी प्राचीन ताड़पत्र अभिलेखों के उन विशिष्ट पन्नों को देख सकते हैं, जिनमें जीवन के पूर्वनिर्धारित पड़ावों का वर्णन होता है।

वर्ग कुंडलियों (Divisional Charts) के विश्लेषण के 4 मुख्य सिद्धांत

• **D1 कुंडली सीमा निर्धारित करती है:** कोई भी वर्ग कुंडली ऐसी घटना उत्पन्न नहीं कर सकती जिसे D1 (लग्न कुंडली) पूरी तरह से नकारती हो। यदि D1 कुंडली का 7वां भाव विवाह से इनकार करता है, तो D9 कुंडली में उच्च का शुक्र केवल कलात्मक प्रतिभा या आंतरिक शांति प्रदान कर सकता है, भौतिक रूप से विवाह नहीं।

• **कार्येश ग्रह (भाव स्वामी) प्राथमिक है:** किसी वर्ग कुंडली में जीवन के किसी क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए, D1 कुंडली के उस भाव के स्वामी को देखें और पता लगाएं कि वह वर्ग कुंडली में कहाँ स्थित है। उदाहरण के लिए, करियर की दिशा जानने के लिए D1 के 10वें भाव के स्वामी को D10 कुंडली में देखें।

• **वर्ग लग्न प्रवेश द्वार है:** किसी भी वर्ग कुंडली का लग्न उस विशिष्ट क्षेत्र के प्रति व्यक्ति के व्यक्तिगत दृष्टिकोण को दर्शाता है। D10 लग्न में क्रूर/अशुभ ग्रह पेशेवर जीवन में तनाव और संघर्ष को दर्शाते हैं; वहीं D9 लग्न में शुभ ग्रह रिश्तों में स्वाभाविक सहजता और सामंजस्य दर्शाते हैं।

• **वर्गोत्तम बल:** जब कोई ग्रह D1 कुंडली और D9 नवांश कुंडली दोनों में बिल्कुल एक ही राशि में स्थित होता है, तो वह वर्गोत्तम हो जाता है। यह ग्रह को अत्यधिक आधारभूत शक्ति प्रदान करता है, जिससे अन्य छोटे-मोटे दोषों के बावजूद उसे अपने कारकत्वों और फलों को पूरा करने की शक्ति मिलती है।

---

https://astroarpitanath.com/hindi/complete-guide-to-divisional-charts/
ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।